छात्राओं की अभिरूचि स्पर्धा के कार्यक्रम सम्पन्न किये जाते हैं। इनमें महापुरुष स्वरूप, रंगोली, नृत्य, गायन, भजन, भाषण, अन्ताक्षरी, कहानी कथन, कुकिंग, आत्म रक्षा आदि की स्पर्धा प्रमुख है। इस कार्यक्रम के माध्यम से महिला नेतृत्व को विकसित किया जाता है।

3. गुरु तेग बहादुर बलिदान दिवस एवं अन्य प्रेरक जयन्ती:- सिक्खों के नवें गुरु तेग बहादुर का बलिदान दिवस, धार्मिक प्रेरणा का विषय है। जिन गुरु की तीन पीढ़ियों ने धर्म की रक्षा के लिए बलिदान किया उनकी स्मृति हमारे युवाओं के लिए प्रेरणाप्रद है। अन्य प्रेरक घटनाओं में युवा दिवस, स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस, होली एवं दीपावली तथा परिषद् का स्थापना दिवस मुख्य हैं।

4. महिला सशक्तिकरण :- महिला एवं बाल विकास के अन्तर्गत यौन हिंसा से वचाव, आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविरों के द्वारा, ग्रामीण महिलाओं में स्वास्थ्य जागरूकता के प्रयत्न किये जाते हैं। बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ अभियान में जागरूकता रैली, कन्या विद्यालयों में सेनेटरी नैपकीन वेडिंग मशीन स्थापित किये जाते हैं।

5. नशा मुक्ति:- देश में बढ़ती नशे की प्रवृत्ति के कारण समाज में विशेष कर युवा वर्ग में अनेक हिंसात्मक विचार तथा प्रवृत्तियों का विकास होता है। समाज में घटित होने वाली दुराचार, छेड़-छाड़ की घटनाएँ, नशे के कारण होती हैं। सामाजिक जागरूकता के लिए एक वर्ष में 50 लाख विद्यार्थीयों को नशा मुक्ति संकल्प कराया गया।

अन्य

1. राहत कार्य:- राष्ट्रीय आपदाओं के समय एक जन एक देश की भावना से परिषद् के सदस्य उदारता पूर्वक धन एकत्र कर राहत कार्यों के लिए प्रदान करते हैं इनमें दक्षिण की सुनामी, चैन्नई, ओडीशा, आन्ध्र प्रदेश, लातूर, गुजरात, लेह तथा केरल और असम में आई प्राकृतिक आपदाओं में परिषद् ने भरपूर आर्थिक एवं राहत सामग्री का सहयोग प्रदान किया।

2. गोष्ठी:- परिषद् द्वारा ज्वलन्त विषयों पर सामाजिक चेतना के लिए विशेषज्ञों द्वारा गोष्ठी का आयोजन किया जाता है। शिक्षा में संस्कार, आर्थिक विकास में बैंको की भूमिका, नोट बंदी, भूगर्भ जल संरक्षण, सार्वजनिक स्वच्छता, धर्म और राजनीति आदि विषयों पर गोष्ठियाँ सम्पन्न हुई हैं।

3. जन सम्पर्क एवं संचार:- परिषद् के विभिन्न प्रकाशन जैसे नीति (मासिक), ज्ञान प्रभा (त्रैमासिक) तथा सेवा कार्यों का साहित्य निरन्तर प्रकाशित किया जाता है। परिषद् की वेबसाइट www.bvpindia.com सभी जानकारी के लिए उपलब्ध है।

4. विकास रत्न / मित्र योजना :- विकास रत्न/विकास मित्र योजना में एक मुश्त 100000/- / 11000/- रुपये दान करने पर दानदाताओं को विकास रत्न/विकास मित्र सम्मान दिया जाता है। यह राशि स्थायी सरकारी निवेशों में जमा की जाती है। इसके ब्याज से सेवा कार्य संचालित होते हैं।

भारत विकास परिषद्

भारत विकास भवन, बी.डी. ब्लाक डी.डी.ए. मार्केट के पीछे, पावर हाउस मार्ग, पीतमपुरा, दिल्ली-110034

दूरभाष: 27313051, 27316049, 27314515

ई मेल-**bvp@bvpindia.com** वेबसाइट-**www.bvpindia.com**

भारत विकास परिषद् से सम्बन्ध में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए परिषद् की वेबसाइट **www.bvpindia.com** को देखें।

Printed by : Yashika Printers # 9818383198 / January 2019

सम्पर्क ◆ सहयोग ◆ संस्कार ◆ सेवा ◆ समर्पण

भारत विकास परिषद्
Bharat Vikas Parishad

परिचय

मातृभूमि की सेवा में समर्पित प्रबुद्ध नागरिकों का एक विशिष्ट संगठन

भारत विकास परिषद् प्रकाशन

स्वस्थ-समर्थ-संस्कारित भारत ★ **Swasth-Samarth-Sanskarit Bharat**

परिचय

भारत विकास परिषद् एक समाजसेवी गैर राजनैतिक संगठन है। समाज के प्रबुद्ध एवं साधन सम्पन्न लोगों के सहयोग से समाज में संस्कार और सेवा के प्रकल्पों के माध्यम से भारतीय संस्कृति पर आधारित समाज रचना का निर्माण करना परिषद् का लक्ष्य है। स्वामी विवेकानन्द जी के शताब्दी वर्ष 1963 में दिल्ली में लाला हंस राज जी तथा डॉ. सूरज प्रकाश जी के प्रयत्नों से परिषद् की स्थापना हुई।

समाज के प्रति संवेदनशीलता और पारदर्शिता के कारण राष्ट्रीय सरंक्षक के रूप में पूज्य सत्यमित्रानन्द गिरि तथा राष्ट्रीय अध्यक्ष के रूप में न्यायविद् डॉ. लक्ष्मीमल्ल सिंघवी, न्यायमूर्ति हंसराज खन्ना, एम. रामा जॉयस, जितेन्द्रवीर गुप्त, डी.आर. धानुका, पर्वता राव का आशीर्वाद प्राप्त हुआ। राज्यपाल श्री जगमोहन, श्री गोविन्द नारायण और सरदार जोगिन्दर सिंह ने परिषद् को अपना सहयोग प्रदान किया।

वर्तमान समय में देश के लगभग सभी प्रान्तों में 1400 शाखाएँ तथा 66000 परिवार सदस्य परिषद् को अपना सहयोग प्रदान करते हैं। संगठन की दृष्टि से देश को 7 रीजन तथा 72 प्रान्तों में विभाजित किया गया है। परिषद् की कार्य पद्धति सम्पर्क, सहयोग, संस्कार, सेवा और समर्पण की पंचसूत्री के आधार पर निर्धारित की गई है।

प्रकल्प एवं कार्यक्रम

परिषद् के प्रकल्पों में सेवा के प्रकल्पों में दिव्यांग सहायता, चिकित्सा शिविर, वनवासी सहायता, निर्धन छात्रों को सहायता प्रमुख कार्यक्रम हैं। युवा वर्ग को संस्कृति के प्रति जागरूक करने के लिए गुरु वन्दन छात्र अभिनन्दन, समूहगान प्रतियोगिता, भारत को जानो, बाल संस्कार शिविर आयोजित किये जाते हैं। सामाजिक जागरूकता के लिए पर्यावरण, नशा मुक्ति, बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ, रक्तदान, संस्कृति सप्ताह कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं।

संस्कार

1. राष्ट्रीय समूहगान प्रतियोगिता:- स्कूली छात्र छात्राओं में देशभक्ति गीतों के सामूहिक गायन की प्रतियोगिता 1967 में प्रारंभ हुई। युवा भारत के निर्माण में यह प्रतियोगिता प्रति वर्ष लगभग 5500 स्कूलों में आयोजित की जाती है। संस्कृत तथा लोकगीतों की प्रतियोगिता भी सम्पन्न होती है। राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में राष्ट्रपति नीलम संजीव रेड्डी, वी.वी. गिरि, डॉ. जाकिर हुसैन, ज्ञानी जैल सिंह, राम नाथ कोविन्द ने अपना आशीर्वाद दिया।

2. भारत को जानो:- भारत के बारे में इतिहास, भूगोल, संस्कृति, धर्म, साहित्य, विज्ञान, खेल, संविधान, धर्मग्रंथ आदि विषयों पर लिखित परीक्षा और प्रश्नोत्तरी के रूप में यह प्रतियोगिता आयोजित की जाती है। प्रतिवर्ष लगभग 15 लाख छात्र-छात्राएँ लिखित परीक्षा में भाग लेती हैं। परिषद् द्वारा प्रकाशित भारत को जानो पुस्तक की 2.5 लाख प्रतियाँ प्रतिवर्ष वितरित की जाती हैं। यह पुस्तक उच्च प्रतियोगी परीक्षाओं की संदर्भ पुस्तक के रूप में लोकप्रिय हो रही है। उच्च शिक्षा एवं प्रबन्धन, तकनीकी संस्थानों के छात्रों के लिए भारत को जानो ऑनलाइन प्रतियोगिता की प्रगति से कुछ वर्षों में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर यह प्रतियोगिता लोकप्रिय हो रही है।

3. गुरु वन्दन छात्र अभिनन्दन:- गुरु शिष्य परम्परा संस्कृति की एक अभूतपूर्व सम्पदा है। आधुनिक युग में गुरु शिष्य संबंध अप्रासंगिक हो गये। न गुरु की गुरुता रही न शिष्यों का समर्पण। परिषद् के सदस्यों द्वारा टीम बनाकर स्कूलों में जाकर गुरु का सम्मान और मेधावी छात्रों का अभिनन्दन कर गुरु शिष्य की श्रेष्ठ परम्परा की स्थापना करने का प्रयास किया जाता है। यह कार्यक्रम अप्रैल से अक्टूबर तक सम्पन्न किया जाता है। अनुमानत: 5000 विद्यालयों में आयोजन किया जाता है।

4. बाल एवं युवा संस्कार तथा प्रौढ़ साधना शिविर:- प्राथमिक एवं माध्यमिक कक्षाओं के छात्र-छात्राओं को सामूहिक जीवन का संस्कार, सहअस्तित्व, त्याग एवं स्नेह की वृत्ति का निर्माण संस्कार शिविरों का उद्देश्य है। बड़ी संख्या में शाखाएँ 3-5 दिनों का आवासीय शिविर अथवा एक दिवसीय संस्कार शिविरों का आयोजन करती हैं। वरिष्ठ नागरिकों को साधना शिविरों के माध्यम से सामाजिक दायित्वों के निर्वाह, सेवा कार्य तथा आरोग्य, प्रवचन आदि के लिए प्रेरित किया जाता है।

सेवा

1. दिव्यांग सहायता एवं पुनर्वास योजना:- परिषद् के 13 दिव्यांग सहायता एवं पुनर्वास केन्द्र लगभग 25-30 हजार कृत्रिम अंग, व्हील चेयर, हियरिंगएड आदि की सहायता प्रति वर्ष प्रदान करते हैं। कृत्रिम अंग निर्माण के साथ इन केन्द्रों पर दिव्यांगों के स्वावलम्बन के लिए प्रशिक्षण, कार्यशाला, नौकरी तथा सरकारी सुविधाएँ जैसे रियायती पास, प्रमाण पत्र, पेंशन आदि सुविधा प्रदान की जाती है। देश के 13 दिव्यांग केन्द्रों के द्वारा प्रति वर्ष 40000 दिव्यांगों को कृत्रिम अंग तथा अन्य सुविधाएँ दी जाती हैं। दिल्ली, लुधियाना केन्द्रों को राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित किया गया। पटना में अतिआधुनिक मशीनों से पोलियो सर्जरी की जाती है।

2. वनवासी सहायता योजना:- देश के 8 करोड़ वनवासी बन्धुओं के शिक्षा स्वास्थ्य एवं स्वावलम्बी जीवन के लिए परिषद् के सदस्य उत्तर पूर्व भारत के वनवासी क्षेत्रों में सेवा कार्य करते हैं। वनवासी बच्चों के आवासीय छात्रावास देश के विभिन्न नगरों में स्थित है। इन छात्रावासों, विद्यालयों तथा स्वास्थ्य संबंधी सुविधाओं में परिषद् का सदैव सहयोग रहता है।

3. ग्राम बस्ती विकास योजना:- परिषद् ने समग्र ग्राम विकास योजना के अन्तर्गत देश भर में 50 गाँवों को विकसित किया है। गाँवों में स्वास्थ्य, शिक्षा, स्वावलम्बन, पेयजल आदि मूलभूत सुविधाओं को प्रदान किया जाता है। कनाडा के शिव जिन्दल फाउण्डेशन के सहयोग से गाँवों को विकसित किया जाता है। मोहब्बतपुर (हरियाणा) को राष्ट्रपति द्वारा पुरस्कृत किया गया है।

4. स्वास्थ्य:- परिषद् की शाखाओं के द्वारा विभिन्न स्तरों पर स्वास्थ्य शिविर दन्त, नेत्र, कैंसर, हृदय रोग, डायबिटीज परीक्षण शिविर लगाकर निर्धन परिवारों की सहायता की जाती है। एम्बुलेंस, नेत्र ऑपरेशन, योग शिविर, स्वास्थ्य कार्यक्रम के प्रमुख अंग है। परिषद् का सुपर स्पेशिलिटी अस्पताल, कोटा (350 बेड, 50 डॉक्टर), चण्डीगढ़ का डायग्नोस्टिक सैंटर (एम.आर.आई. सुविधा युक्त), विवेकानन्द आरोग्य केन्द्र गुरूग्राम (12 डायलिसिस मशीन युक्त), पटना का अतिआधुनिक मशीनों से युक्त पोलियो सर्जरी का दिव्यांग केन्द्र रियायती दरों पर उपलब्ध है।

सम्पर्क

1. सामूहिक सरल विवाह:- आर्थिक प्रतिस्पर्धा के युग में निर्धन कन्याओं का विवाह सम्पन्न कराकर सामाजिक समरसता का एक प्रभावी प्रकल्प चलाया जाता है। प्रति वर्ष लगभग 1000 जोड़ों का विवाह सम्पन्न होता है।

2. संस्कृति सप्ताह:- प्रतिवर्ष सितम्बर मास में सदस्य परिवारों, महिलाओं तथा स्थानीय छात्र